एकलव्य का प्रकाशन

चींचींबाबा के भाई

कहानी
डी. पी. सेनगुप्ता

चित्रांकन
सुमंत्र सेनगुप्ता

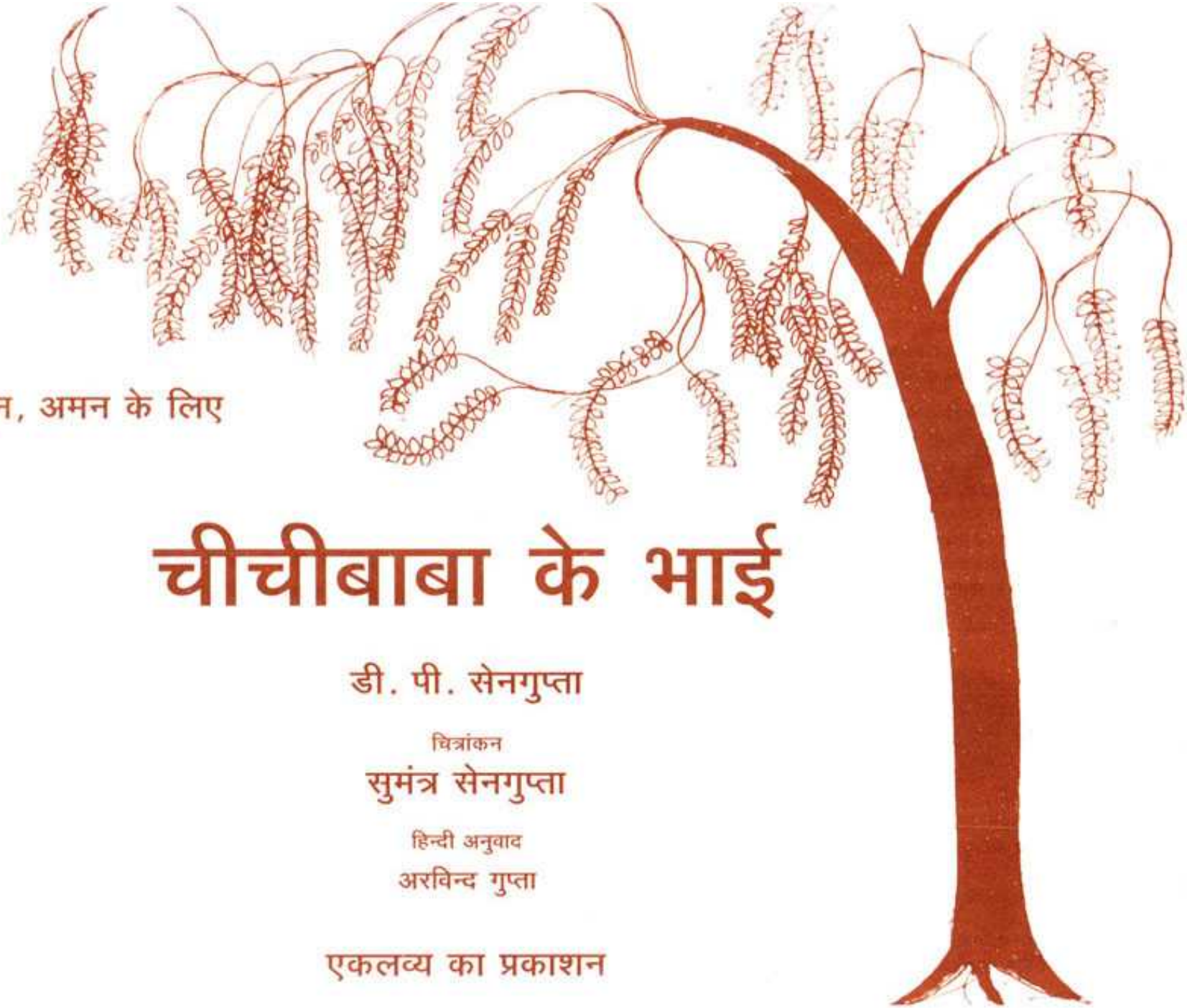

एक प्रकाशन, अमन के लिए

चीचीबाबा के भाई

डी. पी. सेनगुप्ता

चित्रांकन

सुमंत्र सेनगुप्ता

हिन्दी अनुवाद

अरविन्द गुप्ता

एकलव्य का प्रकाशन

चीचीबाबा के भाई
Chichibaba Ke Bhai

लेखक: डी. पी. सेनगुप्ता
अनुवाद: अरविन्द गुप्ता
चित्रांकन: सुमंत्र सेनगुप्ता

© 2002 डी. पी. सेनगुप्ता
© 2002 अरविन्द्र गुप्ता (अनुवाद)
© 2002 सुमंत्र सेनगुप्ता (चित्र)
सर्वाधिक सुरक्षित। इस किताब के किसी भी अंश का किसी भी रूप में उपयोग प्रकाशक, लेखक, चित्रकार व अनुवादक की लिखित अनुमति के बिना न किया जाए।

पहला संस्करण: जनवरी, 2002/5000 प्रतियाँ
पुनर्मुद्रण: नवम्बर, 2005/3000 प्रतियाँ
दूसरा पुनर्मुद्रण: सितम्बर, 2007/3000 प्रतियाँ
तीसरा पुनर्मुद्रण: मई, 2008/5000 प्रतियाँ
चौथा पुनर्मुद्रण: नवम्बर, 2010/5000 प्रतियाँ
70 gsm नेचुरल शेड एवं 200 gsm पेपर बोर्ड
यह किताब मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत शासन एवं सर रतन टाटा ट्रस्ट के वित्तीय सहयोग से प्रकाशित।

ISBN: 978-81-87171-42-3
मूल्य: ₹ 35.00

प्रकाशक: **एकलव्य**
ई-10, बीडीए कॉलोनी शंकर नगर,
शिवाजी नगर, भोपाल - 462 016 (म.प्र.)
फोन: (0755) 255 0976, 267 1017
फैक्स: (0755) 255 1108
www.eklavya.in
सम्पादकीय: books@eklavya.in
किताबें मँगवाने के लिए: pitara@eklavya.in

मुद्रक: आदर्श प्राइवेट लिमिटेड, भोपाल, फोन: (0755) 255 0291

आभार: प्रो. जी आनन्दलिंगम, प्रो. संजय बिस्वास, मेरे परिवार के सदस्य और कई अन्य दोस्तों को उनकी मदद और उत्साहवर्धन के लिए बहुत आभार।

डी.पी.एस.

कारगिल युद्ध के दौरान भारत और पाकिस्तान में अनाथ हुए बच्चों को समर्पित

संसार सागर के किनारे
बच्चों की भीड़ लगी है
शीश पर अचंचल अन्तहीन गगन तल है
और गहरा फेनिल जल प्रतिक्षण नाच रहा है
तट पर कितना कोलाहल हो रहा है
बच्चों की भीड़ लगी है

वे बालू के घरौंदे बना रहे हैं
सीपियों के खेल खेल रहे हैं
विपुल नील सलिल पर
पत्तों को गूँथ-गाँथकर खेल खेल में बनाई गई
उनकी टिकटी तैर रही है
संसार सागर के किनारे
बच्चों की भीड़ लगी है

आकाश में अँधेरा चक्कर काट रहा है
सुदूर जल में नाव डूब रही है
मरण-दूत गतिवान है
बच्चे खेल रहे हैं
संसार सागर के किनारे
शिशुओं का महा-मेला लगा हुआ है...

रवीन्द्रनाथ ठाकुर

दूरदराज़ एक देश था, नाम था जिसका चीचीबाबा। वहाँ दो भाई रहते थे। एक का नाम था गुरुक और दूसरे का टुरुक। दोनों एक-दूसरे को बहुत प्यार करते थे। बस एक बात को लेकर उन दोनों में हमेशा ठन जाती - गुरुक सब काम दाएँ हाथ से करता था, टुरुक बाएँ हाथ से।

गुरुक हमेशा दाएँ हाथ से खाना खाता था और दाएँ हाथ से ही लिखता था।
टुरुक हमेशा बाएँ हाथ से खाना खाता था और बाएँ हाथ से लिखता था।

गुरुक सोचता कि वह सही काम कर रहा है और टुरुक गलत है।
टुरुक सोचता कि वह सही है और गुरुक गलत।

कौन सही है और कौन गलत
इस बात को लेकर दोनों भाइयों में
बहस छिड़ जाती।
वे लड़ने लगते।
तब गुरुक टुरुक को दाएँ हाथ से
घूँसा मारता और टुरुक गुरुक को
बाएँ हाथ से मुक्का मारता।

परन्तु उनकी लड़ाई जल्द ही बन्द भी हो जाती।

फिर गुरुक अपना दायाँ हाथ
टुरुक के गले में डालता
और टुरुक अपना बायाँ हाथ
गुरुक के गले में।

और फिर दोनों भाई हँसते,
बतियाते, खिलखिलाते हुए
सैर करने निकल जाते।

इस तरह कई साल बीत गए। गुरुक और टुरुक बड़े हुए और अपने देश पर राज करने लगे। वे अब भी कभी-कभी बहस करते और लड़ते, परन्तु दोनों एक-दूसरे को बहुत प्यार भी करते थे। उस देश में कुछ और लोग भी थे जो या तो दाएँ हाथ से काम करते थे या फिर बाएँ हाथ से।
जब गुरुक और टुरुक के बीच लड़ाई होती तो ये लोग भी आपस में लड़ते।

एक बार दोनों भाइयों के बीच लम्बी लड़ाई चली। उन दिनों दूर देश से एक चालाक आदमी टौमटौम उनके पास आया हुआ था। उसने कहा, "तुम दोनों को अब अलग-अलग रहना चाहिए।"

और फिर एक लम्बी दीवार से उनका देश दो हिस्सों में बाँट दिया गया। दोनों भाई अलग-अलग रहने लगे।

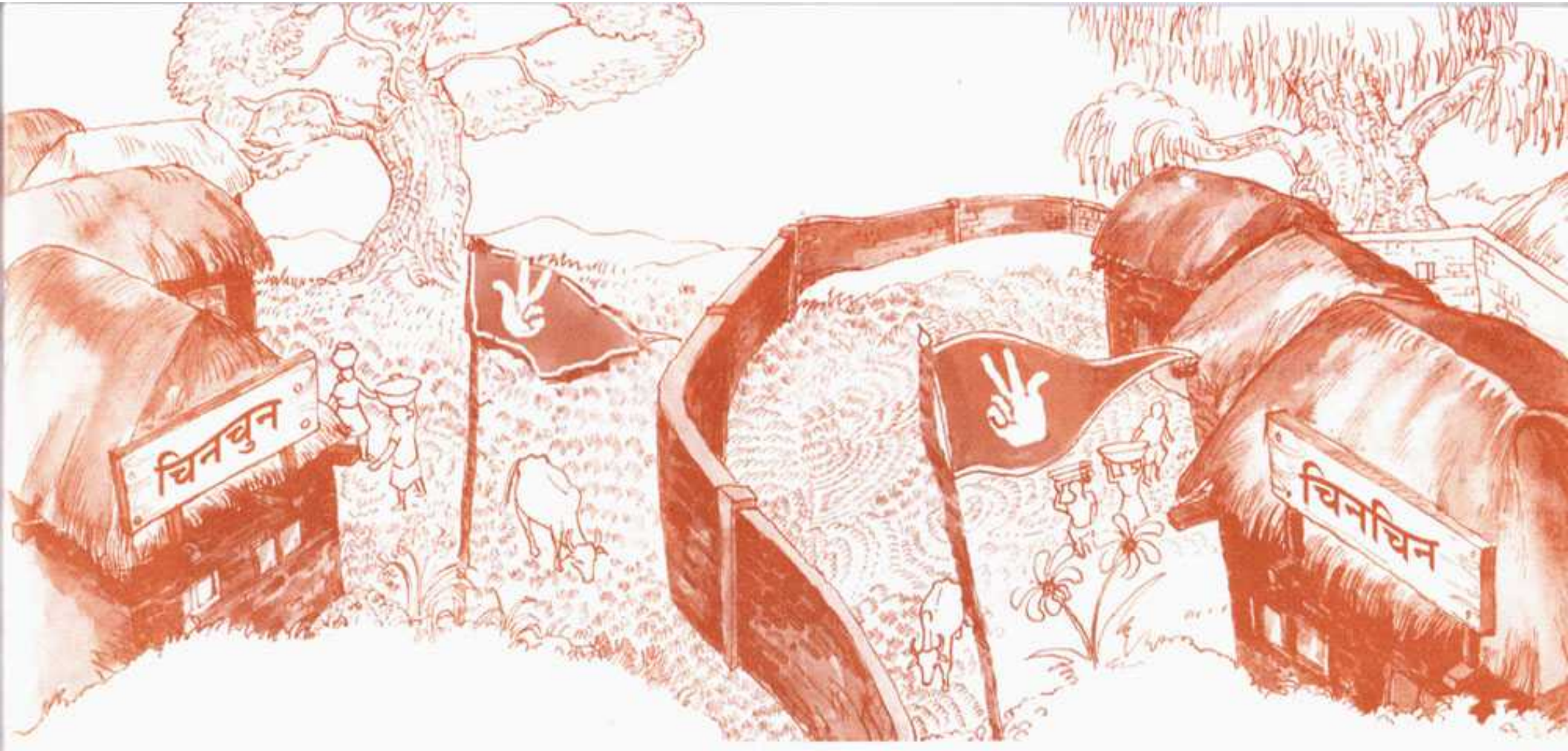

गुरुक के देश का नाम चिनचिन और दुरुक के देश का नाम चिनचुन पड़ा। दाएँ हाथ से काम करने वाले सब लोग चिनचिन चले गए। बाएँ हाथ से काम करने वाले सभी लोग चिनचुन चले गए। समय के साथ-साथ उनके परिवार बढ़े। कुछ दाएँ हाथ वाले परिवारों में बाएँ हाथ से काम करने वाले बच्चे पैदा हुए तो कुछ बाएँ हाथ वाले परिवारों में दाएँ हाथ से काम करने वाले।

टौ मटौम समय-समय पर चिनचिन और चिनचुन आता-जाता रहता था।

"तुम ज़रा टुरुक से सावधान रहना," टौमटौम गुरुक से कहता।
"मैं तुम्हें एक नई दाएँ हाथ वाली गुलेल दूँगा
ताकि तुम अपनी रक्षा कर सको।"

इस तरह टौमटौम ने गुरुक से
गुलेल के लिए ढेर सारे पैसे ले लिए।

उधर टौमटौम ने टुरुक से कहा, "तुम ज़रा गुरुक से सावधान रहना। मैं तुम्हें एक बाएँ हाथ वाली नई गुलेल दूँगा ताकि तुम अपनी हिफाज़त कर सको।"

और टौमटौम ने टुरुक से भी खूब सारा धन वसूला।

जैसा कि हम सब जानते हैं, दाएँ हाथ वाली गुलेल और
बाएँ हाथ वाली गुलेल में कोई अन्तर नहीं होता।
दोनों एकदम एक-जैसी होती हैं।

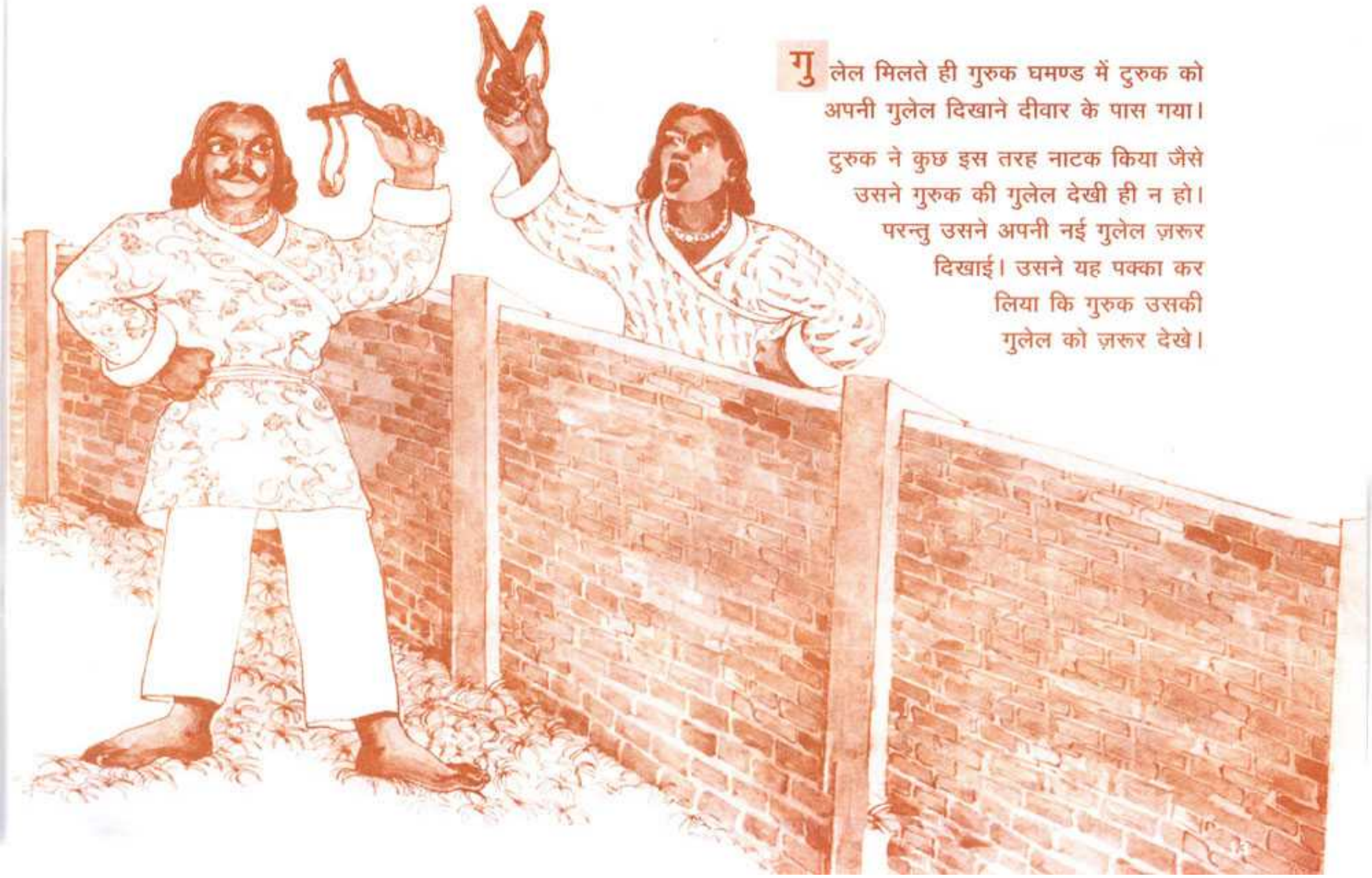

गुलेल मिलते ही गुरुक घमण्ड में टुरुक को अपनी गुलेल दिखाने दीवार के पास गया।

टुरुक ने कुछ इस तरह नाटक किया जैसे उसने गुरुक की गुलेल देखी ही न हो। परन्तु उसने अपनी नई गुलेल ज़रूर दिखाई। उसने यह पक्का कर लिया कि गुरुक उसकी गुलेल को ज़रूर देखे।

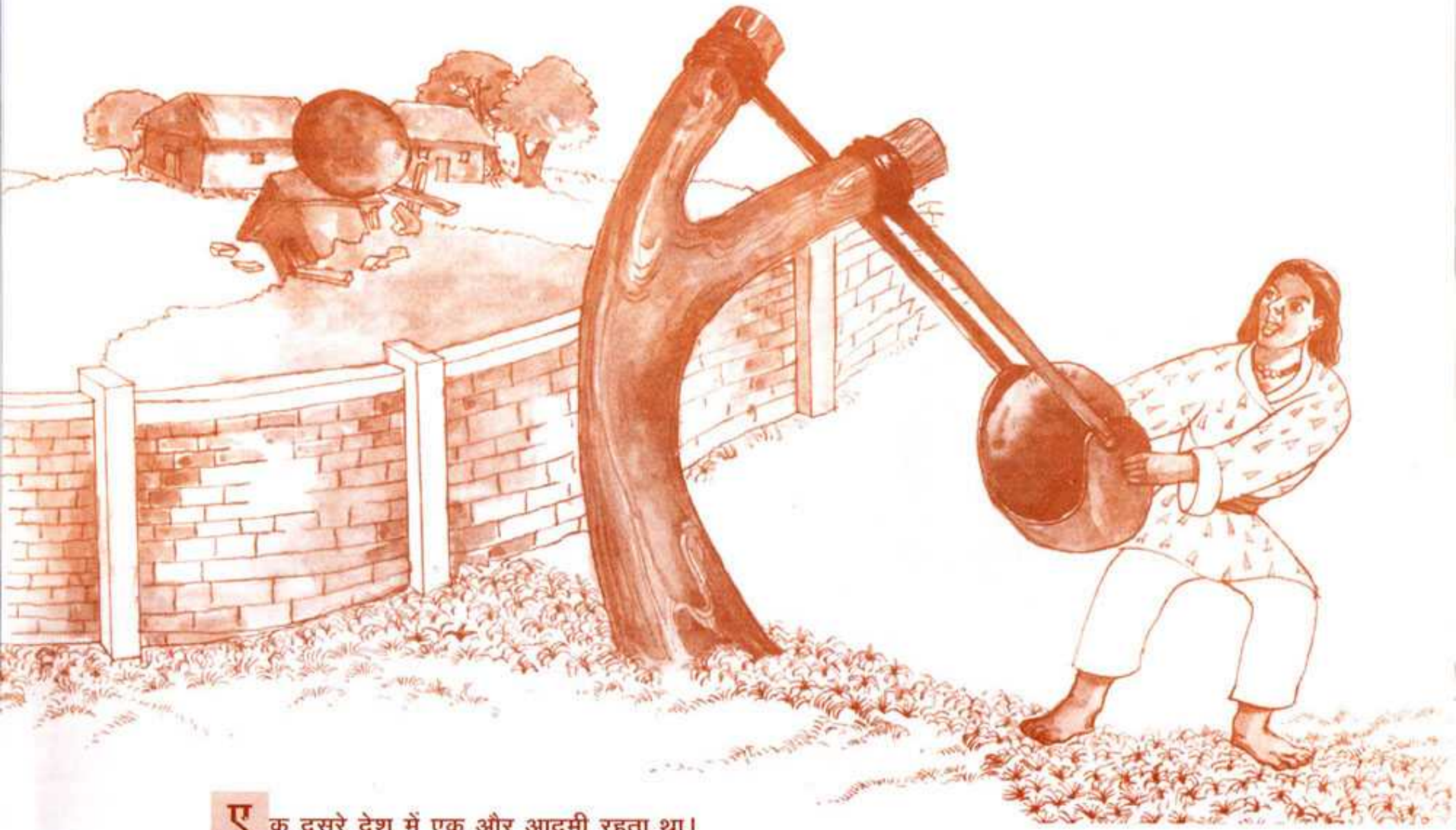

एक दूसरे देश में एक और आदमी रहता था।
उसका नाम सैमसम था और वह हथियार बनाता था। सैमसम ने गुरुक को एक बहुत बड़ी गुलेल बेची जिससे बहुत भारी-भारी पत्थरों को फेंका जा सकता था। अगर ये पत्थर घरों पर गिरते तो उनको चकनाचूर कर देते।

गुरुक बहुत खुश हुआ। वह आराम से बैठकर खुशी-खुशी हुक्का पीने लगा। हुक्के के अन्दर से गुड़गुड़ाने की आवाज़ आई - गुरुक गुरुक गुरुक

टुरुक है पक्का करुक

गाने का मतलब था कि टुरुक धोखेबाज़ और चोर है।

टुरुक ने जब यह गाना सुना तो वह परेशान हो गया। वह सीधा टौमटौम के पास गया। टौमटौम ने एक नया हथियार बनाया था - एक तरह की तोप। तोप की नली में बारूद के साथ लोहे का एक बड़ा गोला ठूँसा जाता था। आग लगाते ही बारूद में विस्फोट होता और दनदनाता हुआ गोला बहुत दूर जा गिरता।

"इससे तमाम घरों को तबाह किया जा सकता है और बहुत सारे लोगों को मारा जा सकता है," टौमटौम ने कहा।

टुरुक ने टौमटौम को बहुत सारा पैसा देकर तोप खरीद ली।

टुरुक ने तोप को दोनों देशों को बाँटने वाली दीवार के पास रखा। उसने तोप का मुँह गुरुक के घर की ओर किया।

फिर उसने ज़ोर-ज़ोर से गाना शुरू किया ताकि गुरुक उसका गाना सुन सके। गाना था -

"मैं हूँ बादशाह, मैं हूँ नरेश,
मेरे पास तो तोप है,
गुरुक के पास गुलेल।"

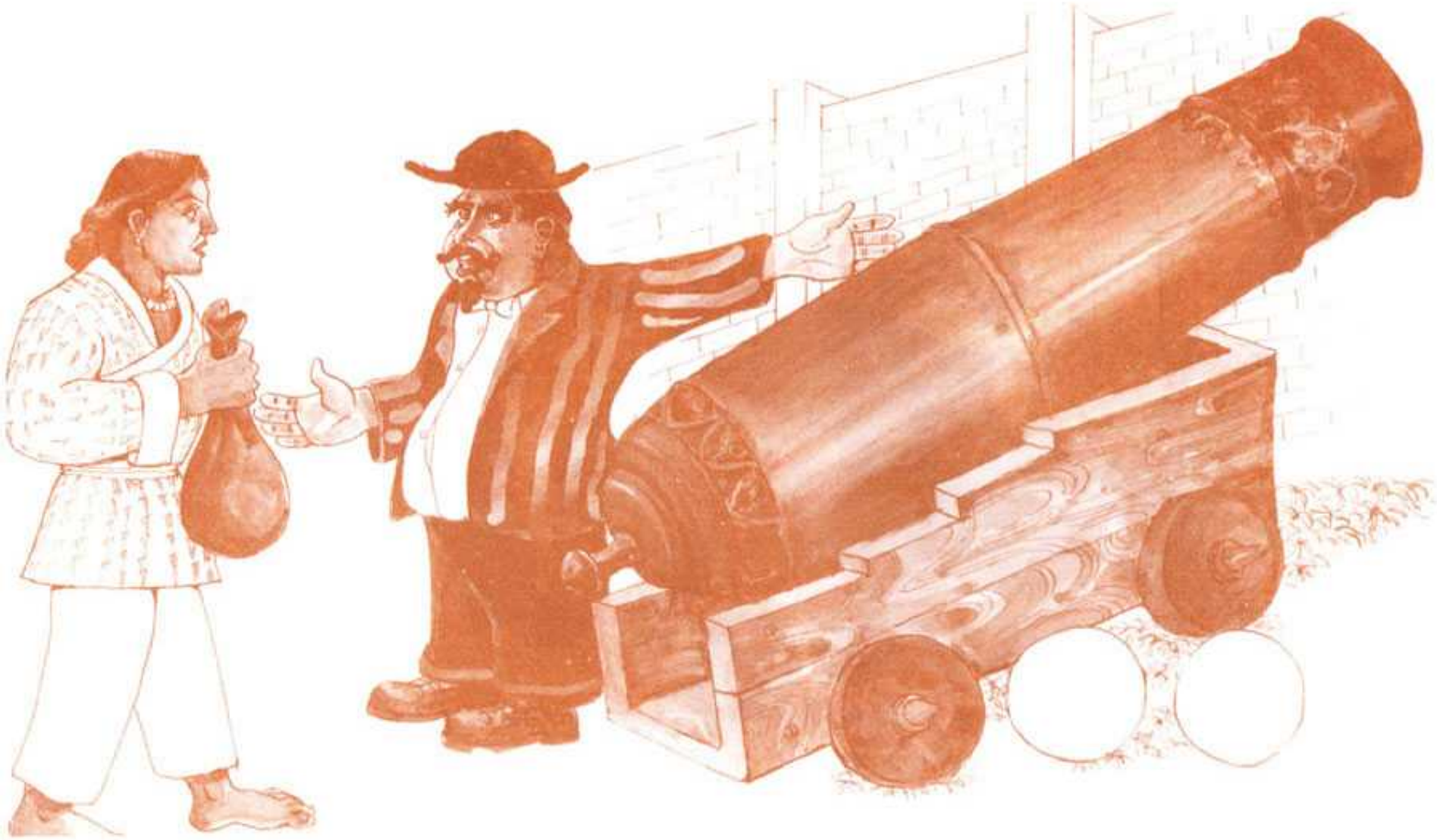

गुरुक ने गाना सुना। तोप क्या होती है यह उसे पता नहीं था। वह तुरन्त सैमसम के पास गया। सैमसम ने उसे एक बहुत बड़ी तोप दी जो और ज़्यादा घरों को तबाह कर सकती थी। बहुत सारे लोगों को मार सकती थी। गुरुक ने सैमसम को बहुत सारा धन दिया और तोप लेकर घर आ गया।

इस तरह साल-दर-साल यही सिलसिला चलता रहा।
गुरुक और टुरुक, दाएँ हाथ और बाएँ हाथ से काम करने वाले दो भाई,
जो कभी एक-दूसरे को बहुत प्यार करते थे, अब एक-दूसरे से नफरत करने लगे।

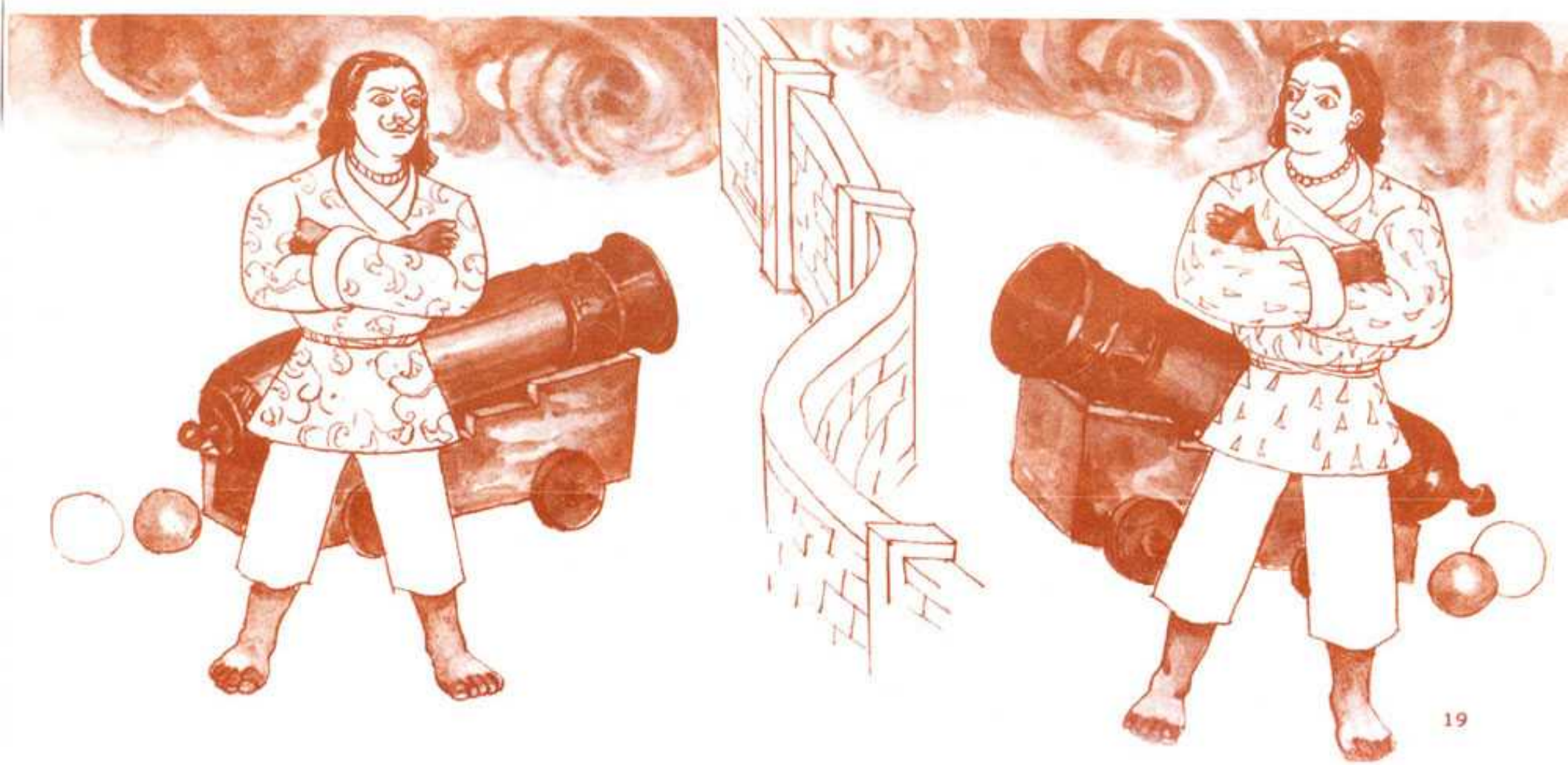

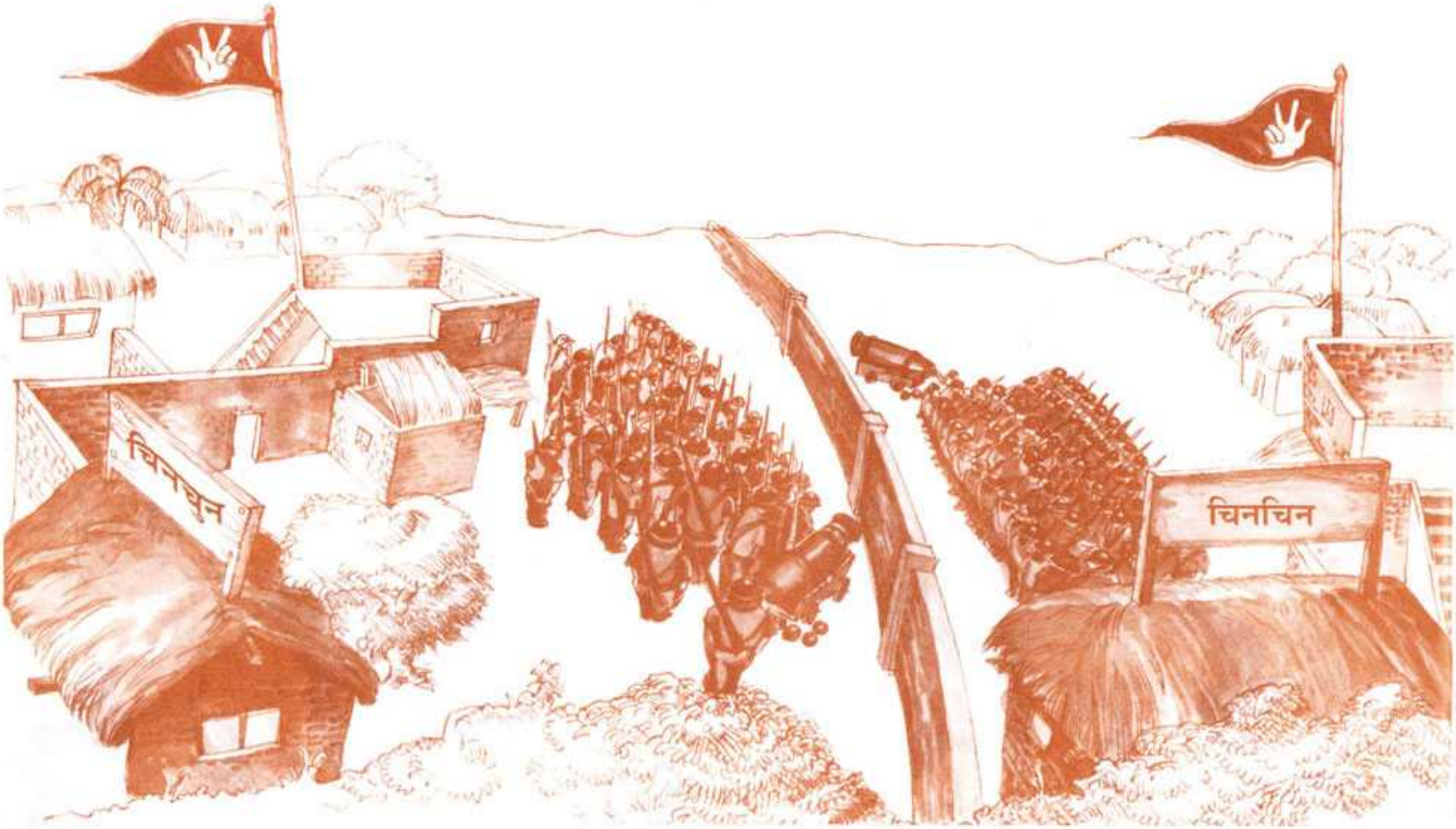

उनके देशों के बीच की दीवार के दोनों ओर अब तरह-तरह के हथियारों का जमघट था। दोनों ओर तोपें तनी थीं। वर्दी पहने, बाएँ हाथ वाले फौजी और दाएँ हाथ वाले सैनिक दीवार के दोनों ओर, अपने-अपने देश की सुरक्षा के लिए तैनात थे।

इन तमाम हथियारों को खरीदने में और सैनिकों को तनख्वाह देने में बहुत सारा पैसा खर्च करना पड़ता था। इससे एक ओर तो गुरुक और टुरुक गरीब हो गए और दूसरी ओर टौमटौम और सैमसम एकदम मालामाल हो गए।

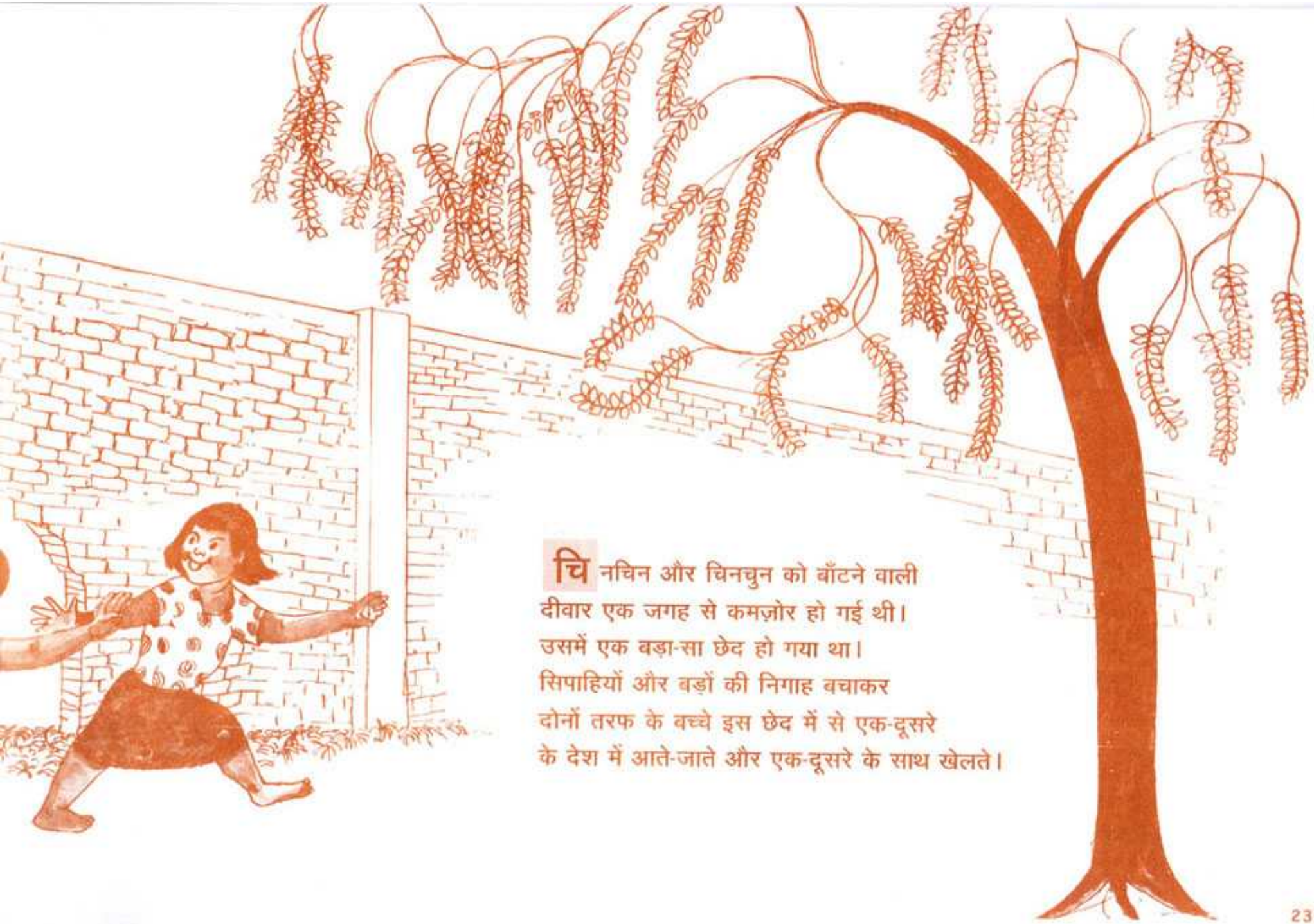

चिनचिन और चिनचुन को बाँटने वाली
दीवार एक जगह से कमज़ोर हो गई थी।
उसमें एक बड़ा-सा छेद हो गया था।
सिपाहियों और बड़ों की निगाह बचाकर
दोनों तरफ के बच्चे इस छेद में से एक-दूसरे
के देश में आते-जाते और एक-दूसरे के साथ खेलते।

टुरुक ने अपने देशवासियों को समझाया, "जब मैं इस बम को चिनचिन पर गिराऊँगा तो वहाँ की हरेक चीज़ पिघल जाएगी। सब लोग मारे जाएँगे और फिर वहाँ कोई बाएँ हाथ वाला आदमी हमें धमकाने के लिए नहीं बचेगा। वर्षों तक वहाँ घास का तिनका तक नहीं उगेगा।"

"वाह!" चिनचुन के लोग ज़ोर से चिल्लाए।

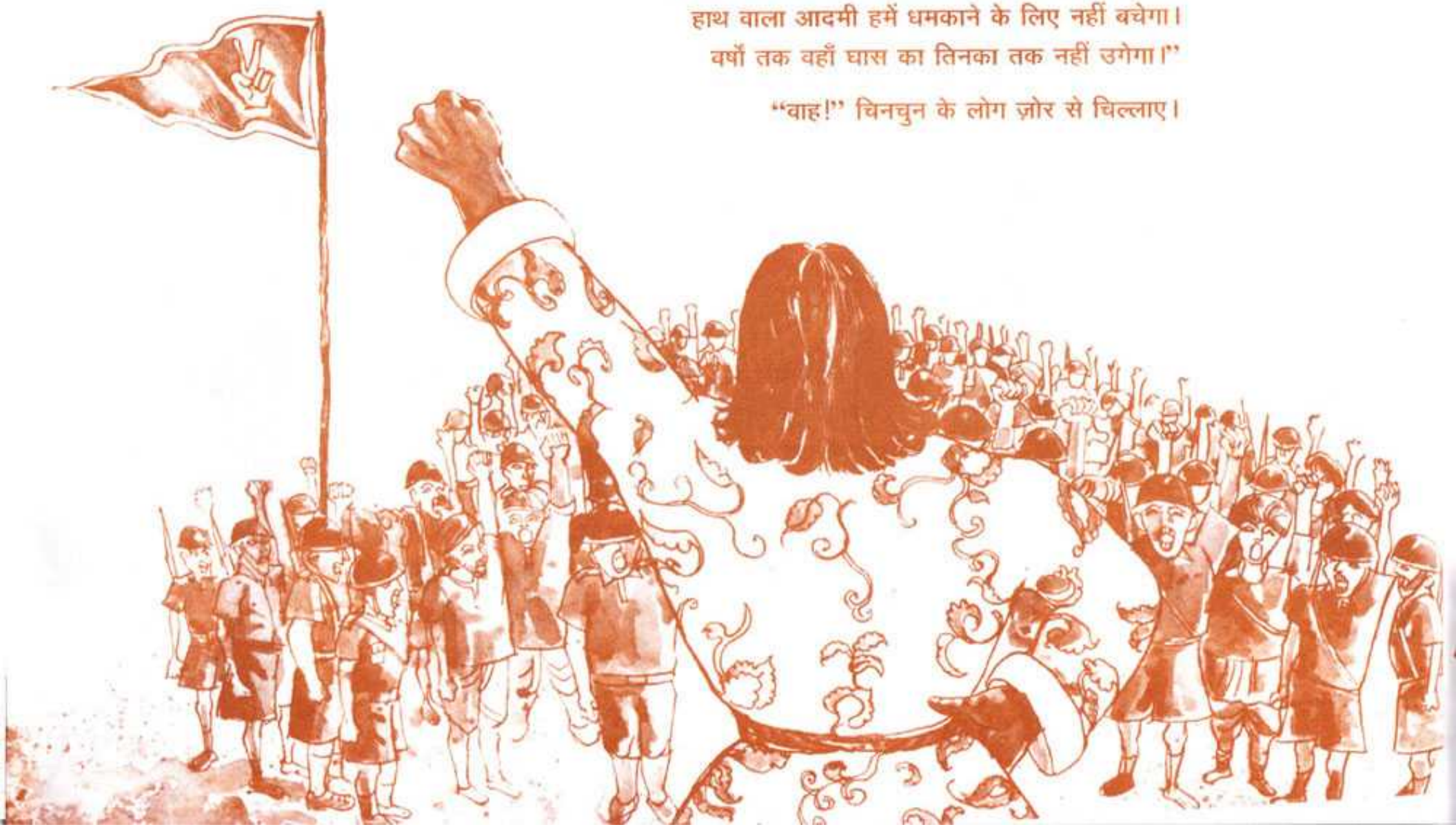

इन बच्चों को एक बात नहीं पता थी। चिनचिन और चिनचुन के होशियार लोगों ने पता लगा लिया था कि टौमटौम और सैमसम ने किस तरह से ऐसे बेहद ताकतवर बम बना लिए थे जिनसे पूरे के पूरे देश को नष्ट किया जा सकता था।

दोनों देशों के होशियार लोगों ने भी बहुत मेहनत करके उसी तरह के बम बना लिए थे। गुरुक ने अपने देशवासियों से कहा, "जब मैं चिनचुन पर यह बम गिराऊँगा तब पलक झपकते ही वहाँ के सारे लोग मर जाएँगे। वहाँ पर इतनी गर्मी पैदा होगी कि धरती मक्खन की तरह पिघलने लगेगी।"

"वाह!" चिनचिन के लोग ज़ोर से चिल्लाए।

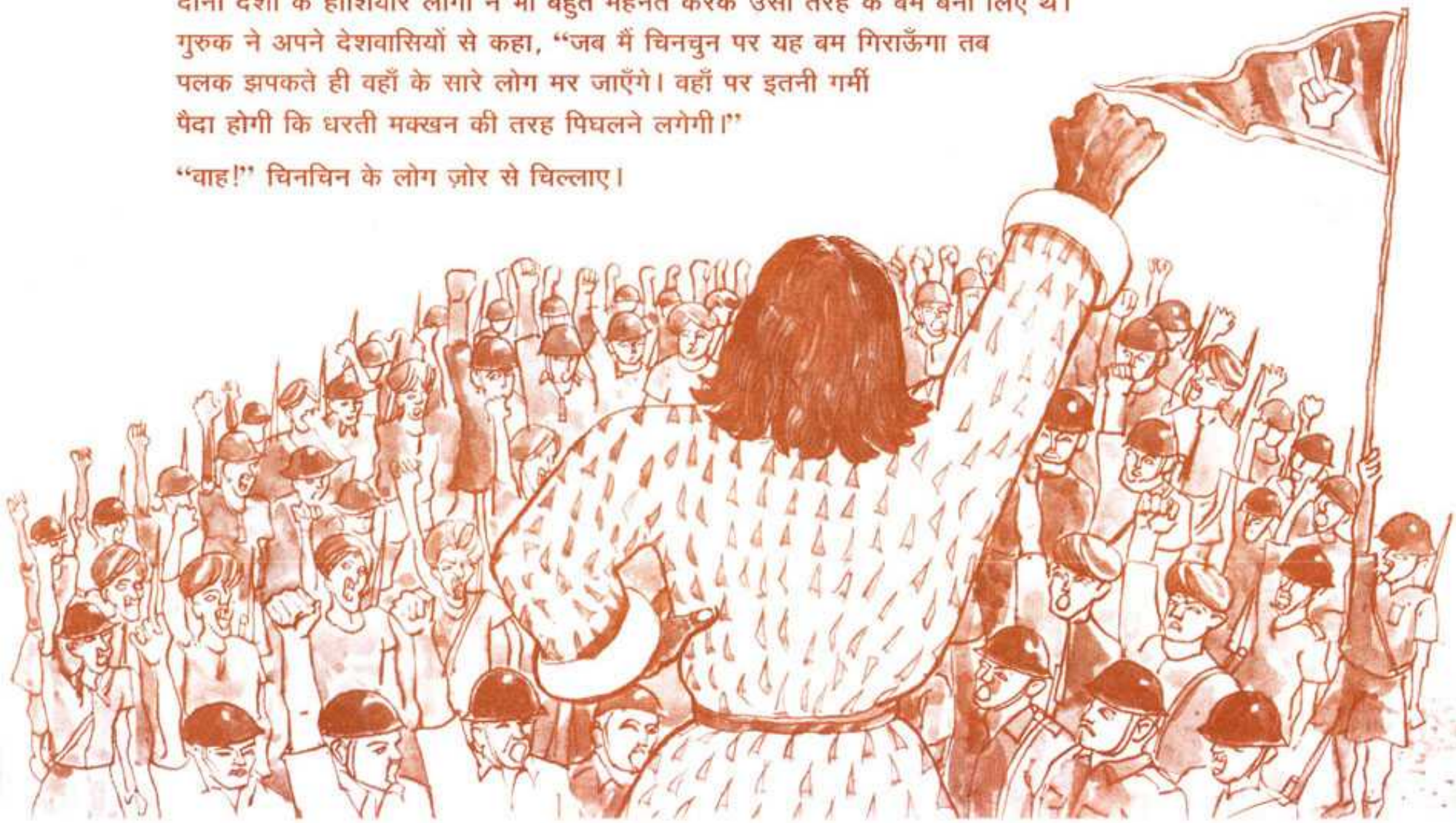

बच्चों को यह सब बिलकुल पल्ले नहीं पड़ा। शाम होते ही चिनचिन और चिनचुन के बच्चे दीवार के बड़े छेद के पास इकट्ठे हुए। चिनचिन के बच्चों ने अपने बाएँ हाथ बढ़ाए और चिनचुन के बच्चों के दाएँ हाथों को थाम लिया। बच्चे सहमे और भयभीत थे।

मक्खन की तरह पिघलना क्या होता है, उन्हें नहीं मालूम था।

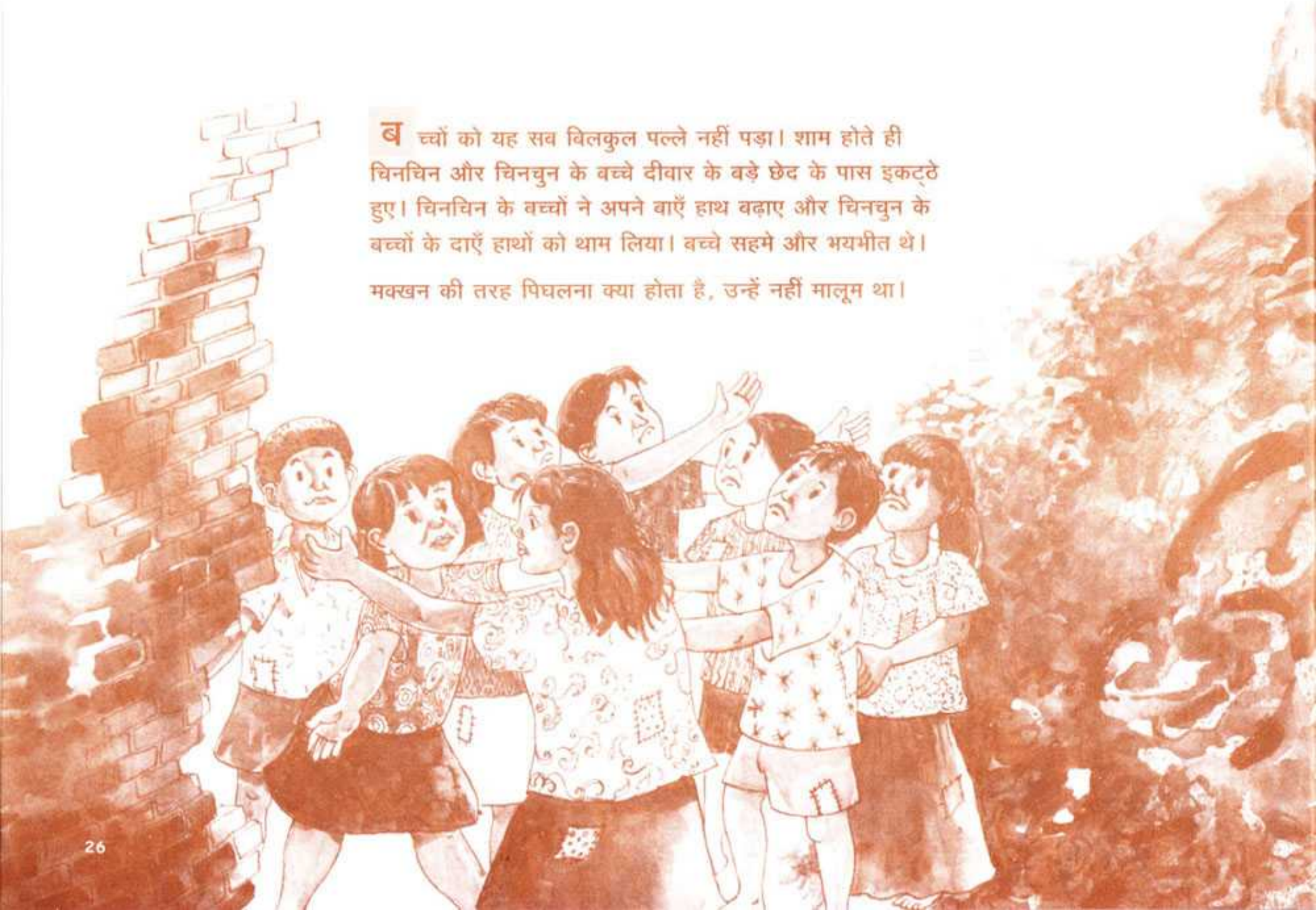

"अगर हम पिघल गए तो हमारे हाथ भी नहीं बचेंगे। फिर बाएँ हाथ वाले और दाएँ हाथ वाले बच्चे भी नहीं बचेंगे। तब हम सब एक जैसे हो जाएँगे," चिनचिन के किंशुक ने कहा।

"इससे क्या फर्क पड़ेगा? तब तक तो हम सभी मर जाएँगे, है न?" चिनचुन की रुक्मा ने पूछा।

"वैसे भी हम लोग मरेंगे ही। मैंने दो दिन से कुछ भी नहीं खाया है।" एक छोटे लड़के ने कहा। यह पता नहीं चला कि वह छोटा लड़का, चिनचिन का था या चिनचुन का।

अपने-अपने घर की खिड़कियों से गुरुक और टुरुक ने बच्चों की इस भीड़ को देखा। सिपाही बच्चों को पकड़ने ही वाले थे कि दोनों भाइयों ने उन्हें रोक लिया।

दोनों भाई अपने-अपने घरों से बाहर निकले और दीवार के छेद के दोनों ओर खड़े हो गए। गुरुक और टुरुक एक-दूसरे को काफी देर तक टकटकी बाँधे देखते रहे।

सालों बाद, यह पहला मौका था जब वे एक-दूसरे से मिल रहे थे। वे बस एक-दूसरे को देखते रहे। उन्हें वे सुनहरे दिन याद आने लगे जब वे साथ रहते थे और एक-दूसरे को प्यार करते थे।

"हमने अपना क्या हाल बना लिया है," दोनों भाई चिल्लाए और उनकी आँखों से आँसू बहने लगे।

गुरुक और टुरुक दोनों ने अपने हाथ बढ़ाए और एक-दूसरे के गले लग गए। "हम अपने सारे हथियार और बम नष्ट कर देंगे और फिर उसी तरह रहेंगे जैसे पहले रहा करते थे," उन्होंने कहा।

बच्चों को यह नज़ारा देखकर अपनी आँखों पर यकीन नहीं हुआ। पहले तो वे थोड़ा-सा घबराए। लेकिन फिर हँसने लगे, पहले धीरे से और फिर ज़ोर-ज़ोर से।

दोनों तरफ के लोग भी इस खुशी में शामिल हुए और हँसने लगे।

फिर . . .

बच्चों ने एक गोला बनाया
और खुशी का गाना गाया।
फिर नाच-कूद की होड़ लगाई।

हँसते-रोते, नंगे-भूखे
खुशी से सबके आँसू सूखे
प्रेम ने जंग की आग बुझाई।

लेखक व चित्रकार परिचय

प्रो. डी.पी. सेनगुप्ता इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस, बैंगलोर - 560 012 में काम करते थे।
वे बैंगलोर में रहते हैं।
ई मेल - sengupta@bgl.vsnl.net.in

श्री सुमंत्र सेनगुप्ता कलकत्ता आर्ट कॉलेज एवं शांति निकेतन, विश्वभारती से प्रशिक्षित हैं। वे एनडीटीवी के साथ काम करते थे। शौकिया चित्रकारी करते हैं।

एकलव्य का परिचय

एकलव्य (शैक्षिक शोध एवं नवाचार संस्थान) एक स्वैच्छिक संस्था है। यह पिछले बीस वर्षों से शिक्षा एवं जनविज्ञान के क्षेत्र में काम कर रही है।

एकलव्य का मुख्य उद्देश्य है ऐसी शिक्षा का विकास जो बच्चे व उसके पर्यावरण से जुड़ी हो, जो खेल गतिविधि व सृजनात्मक पहलुओं पर आधारित हो। इस काम के दौरान यह बात महसूस हुई कि स्कूली प्रयास तभी सार्थक हो सकते हैं जब बच्चों को स्कूली समय के बाद घर में भी रचनात्मक गतिविधियों के साधन उपलब्ध हों, जिनमें किताबें तथा पत्रिकाएँ एक अहम हिस्सा हैं।

पिछले कुछ वर्षों में एकलव्य ने अपने काम का विस्तार प्रकाशन के क्षेत्र में भी किया है। बच्चों की पत्रिका **चकमक** के अलावा **स्रोत** (विज्ञान एवं टेक्नॉलॉजी फीचर) तथा **संदर्भ** (शैक्षिक पत्रिका) नियमित प्रकाशन हैं। शिक्षा, जनविज्ञान, बच्चों के लिए सृजनात्मक गतिविधियों के अलावा विकास के व्यापक मुद्दों से जुड़ी किताबें, पुस्तिकाएँ, सामग्री आदि भी एकलव्य ने विकसित व प्रकाशित की हैं।

"मैंने तय किया है कि मैं प्यार का साथ ही निभाऊँगा। नफरत का बोझ बहुत भारी पड़ता है।"

- मार्टिन लूथर किंग

एक प्रकाशन, अमन के लिए

ISBN: 978-81-87171-42-3
9 788187 171423

मूल्य: ₹ 35.00

A0134H